नईदुनिया

टैरिफ की मार से बेहाल कैलीफोर्निया ने ट्रम्प सरकार के खिलाफ किया मुकदमा

कैलीफोर्निया

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा लगाए गए टैरिफ की मार से अन्य देश ही नहीं, बल्कि अमेरिका के राज्य भी काफी परेशान हैं। हालात यह हैं कि कैलीफोर्निया राज्य ने लगाए गए टैरिफ पर रोक के लिए संघीय अदालत में मुकदमा दायर कर दिया है।

राज्य का आरोप है कि राष्ट्रपति ने शक्तियों का गलत प्रयोग किया है। इससे उनके राज्य ही नहीं बल्कि पूरे अमेरिका की अर्थ व्यवस्था को काफी नुकसान पहुंच रहा है।

राज्य सरकार ने कहाः राष्ट्रपति को टैरिफ लगाने का अधिकार ही नहीं

बीते दनों डोनाल्ड ट्रम्प ने दस फीसदी से लेकर ऊंची दरों पर टैरिफ लगाए हैं। इस टैरिफ से अमेरिका के कमोवेश सभी राज्य परेशान हैं, लेकिन अभी कैलीफोर्निया खुलकर टैरिफ के विरोध में आ गया है। संघीय अदालत में दायर मुकदमे में कैलीफोर्निया स्टेट ने कहा कि संविधान के मुताबिक टैरिफ लगाने का अधिकार सिर्फ कांग्रेस के पास है। राष्ट्रपति के पास इसका कोई अधिकार ही नहीं हैं।राष्ट्रपति ने इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनामिक पावर्स एक्ट की दलील देकर टैरिफ लगाया है, जो कि गलत है। यह कानून राष्ट्रपति को उनके मन मुताबिक टैरिफ लगाने का अधिकार नहीं देता है। गौरतलब है कि कैलिफोर्निया अमेरिका में सबसे अधिक सामान आयात करता है। यहां के 12 बंदरगाहों के जरिए 40 फीसदी आयात होता है। इसलिए टैरिफ लगाने से सबसे अधिक यह राज्य ही प्रभावित हुआ है। इस टैरिफ से राज्य की अर्थ व्यवस्था के साथ ही नौकरियों पर भी असर पड़ सकता है।

उधर मामला अदालत तक जाने पर व्हाइट हाउस ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की है। सरकारी प्रवक्ता कुश देसाई ने कैलीफोर्निया के गवर्नर गैविन न्यूजम से कहा कि उनके राज्य में अपराध चरम पर है। महंगाई की समस्या से लोग जूझ रहे हैं। उन्हें राज्य की समस्याओं पर ध्यान दें, न कि टैरिफ को रोकने के प्रयास करनी चाहिए। उनका यह कदम किसी भी सूरत में उचित नहीं कहा जा सकता।

न्यूज ब्रीफ

रूस ने किया हमलाः खेरसान में एक की मौत, नौ घायल

कीव। रुस लगातार यूक्रेन पर हमले कर रहा है। लोग मारे जा रहे हैं और शांति के प्रयास लगातार असफल होते जा रहे हैं। यूक्रेन के दक्षिणी शहर खेरसान पर बुधवार को रूस ने ग्लाइड बम और तोपों से हमला किया, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और नौ लोग घायल हो गए। यूक्रेनी अधिकारी ओलेक्सांद्र प्रोकोडिन ने बताया कि सुबह पहले रूस ने बमबारी की और जब बचाव दल मौके पर पहुंचे, तो रूसी सेना ने दोबारा तोपों से हमला कर दिया। प्रोकोडिन ने कहा, यह रूस की एक सोची-समझी चाल है ताकि घायलों को बचाया न जा सके और डॉक्टरों, पुलिस और बचाव कर्मियों को नुकसान पहुंचे।

टैरिफ की मार से परेशान अमेरिकी राज्य ने खटखटाया अदालत का दरवाजा

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेशों से केवल दुनियाभर के देश परेशान नहीं हैं बल्कि खुद अमेरिका भी इन दिक्कतों से अछूता नहीं है। कैलिफोर्निया ने ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ को रोकने के लिए संघीय अदालत में मुकदमा दायर किया है। राज्य का आरोप है कि ट्रंप ने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग किया है और इससे न केवल कैलिफोर्निया बल्कि पूरे देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचा है। कैलिफ़ोर्निया अमेरिका में सबसे ज्यादा सामान आयात करता है और जिसकी 12 बंदरगाहों के जरिए 40 प्रतिशत आयात होता है, सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। 2022 में कृषि निर्यात 23.6 बिलियन डॉलर था, जो अब खतरे में है और इससे हजारों नौकरियों पर असर पड़ सकता है।वाइट हाउस के प्रवक्ता कुश देसाई ने कैलिफ़ोर्निया के ऐक्शन पर गवर्नर गैविन न्यूजम पर निशाना साधते हुए कहा, उन्हें अपने राज्य की अपराध, बेघरपन और महंगाई की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए, न कि ट्रंप के टैरिफ़्स को रोकने की कोशिश करनी चाहिए। कैलिफोर्निया स्टेट द्वारा दायर मुकदमे में कहा गया है कि टैरिफ लगाने का अधिकार संविधान के अनुसार कांग्रेस के पास है, न कि राष्ट्रपति के पास। ट्रंप ने एक्ट का हवाला दिया, लेकिन यह कानून राष्ट्रपति को अपने मन से सभी वस्तुओं पर टैक्स लगाने की इजाजत नहीं देता। नए टैरिफ़्स से शेयर बाजार और बांड मार्केट में भारी गिरावट आई है, जिससे अरबों डॉलर की पूंजी नष्ट हो गई। ट्रंप ने सभी देशों से आने वाले सामानों पर 10प्रतिशत का टैरिफ लगाया है। कुछ देशों के लिए जो अमेरिका के आयात पर ऊंची बाधाएं लगाते हैं, उनके लिए यह दर और ज्यादा है। इसके अलावा, चीन पर 245 प्रतिशत का टैरिफ लगाया गया है, हालांकि कुछ इलेक्ट्रॉनिक सामानों को इससे छूट मिली है।

जहां भारतीयों की एंट्री बंद थी वहीं लगी महात्मा गांधी की प्रतिमा

ब्लूमफोनटेन। दक्षिण अफ्रीका के फ्री स्टेट प्रांत की राजधानी ब्लूमफोनटेन में अब महात्मा गांधी की कांस्य प्रतिमा शान से खड़ी है। यह वही इलाका है, जहां रंगभेद कानूनों के चलते एक सदी से ज्यादा समय तक भारतीयों का प्रवेश वर्जित था। महात्मा गांधी की यह प्रतिमा मशहूर मूर्तिकार पद्मभूषण रामवांगी सुतार ने बनाई है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) ने इसे आंग्ल-बोअर युद्ध संग्रहालय को दान किया। 11 अप्रैल को भारतीय उच्चायुक्त प्रभात कुमार ने आंग्ल-बोअर युद्ध संग्रहालय में इसका अनावरण किया। इस मौके पर भारतीयों की इस युद्ध में भूमिका पर एक डॉक्युमेंट्री और किताब भी जारी की गई। 1994 में नेल्सन मंडेला के राष्ट्रपति बनने से पहले इस प्रात को पहले ऑरेंज फ्री स्टेट कहा जाता था और यहां कानूनी रूप से भारतीयों का प्रवेश वर्जित था। यहां तक कि जो भारतीय डर्बन जैसे शहरों की तरफ जाते थे, उन्हें भी यहां से गुजरने के लिए पहले से इजाजत लेनी पड़ती थी ।

50 लाख साल पहले आई भयावह बाढ़ ने सूख चुके भूमध्य सागर को पानी से भर दिया : शोध

लंदन

करीब 50 लाख साल पहले धरती पर एक ऐसी विनाशकारी घटना हुई, जिसने न सिर्फ भूगोल को बदल दिया बल्कि आज के भूमध्य सागर का जन्म को भी तय किया। वैज्ञानिकों के अनुसार तब भूमध्य सागर पूरी तरह सूख चुका था और यह इलाका एक विशाल, गर्म, सूखी और नमकीन घाटी जैसा था। अटलांटिक महासागर से संपर्क टूटने के कारण यहाँ का जल स्तर हजारों फीट नीचे चला गया और नमक की मोटी परतें समुद्र तल पर जम गई। इस सूखे काल को 'मेसिनियन नमक संकट' बताया गया। परंतु यह संकट तब खत्म हुआ जब अटलांटिक महासागर का पानी एक विशाल बाढ़ के रूप में घाटी में घुस आया।

इस बाढ़ को ज़ैंकलीन मेगाफ्लड के नाम जाना गया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह बाढ़ जिब्राल्टर की जगह से आई, जहां आज अटलांटिक महासागर और भूमध्य सागर आपस में मिलते हैं। बाढ़ की रफ्तार इतनी तेज थी कि पानी एक किलोमीटर ऊंची ढलान से गिरा और इसकी गति एक तेज रफ्तार कार से भी ज्यादा थी। इतना ही नहीं पानी ने अपने रास्ते में इतनी गहरी खाई बनाई, जितनी ऊंची आज की गगनचुंबी इमारतें होती हैं। इतना सारा पानी कुछ सालों या शायद कुछ महीनों में पूरे सूखे भूमध्य बेसिन को भर गया। जब यह बाढ़ चरम पर थी, तब इसमें अमेज़न नदी से करीब 1,000 गुना अधिक पानी बह रहा था।

2009 में वैज्ञानिकों ने बताया कि जिब्राल्टर के पास समुद्र के नीचे एक बड़ी घाटी का पता लगाया, जो शायद विशाल बाढ़ के कारण बनी थी। हाल ही में वैज्ञानिकों ने ज़ैंकलीन युग की तलछटी चट्टानों की जांच की, जिनसे यह स्पष्ट हुआ कि कैसे पानी ने सिसिली और अफ्रीका के बीच की जमीन को पार कर पूर्वी भूमध्य सागर को भी भरा। सिसिली के दक्षिणी हिस्से में वैज्ञानिकों ने असामान्य आकृतियों वाली पहाड़ियों का अध्ययन किया, जो वाशिंगटन (अमेरिका) में पिछली बर्फीली महाबाढ़ से बनी पहाड़ियों जैसी थीं। वहां मिली चट्टानें और कटाव इस बात का संकेत देती हैं कि यह इलाका भी एक भयानक बाढ़ से गुजरा था। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि पानी की रफ्तार 115 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती थी और यह 40 मीटर तक गहराई में जमीन को काटता हुआ बहा। एक अनुमान के अनुसार हर सेकंड 1 करोड़ 30 लाख क्यूबिक मीटर पानी इस बाढ़ में बह रहा था। यह आंकड़ा इसकी पुष्टि करता है कि यह पृथ्वी के इतिहास की सबसे भीषण बाढ़ों में से एक रही होगी। इसने न केवल समुद्र का रूप बदला बल्कि जीव-जंतुओं की प्रजातियों पर भी गहरा असर डाला। भूमध्य सागर की आज की संरचना इसी घटना की देन है।

बेटियों से उनका आईपैड लेना, मां को पड़ गया इतना भारी

लंदन। ब्रिटेन से हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां इतिहास की टीचर को गिरफ्तार किया गया। टीचर की गिरफ्तारी का कारण ही सबसे चौंकाने वाली वजह है। दरअसल उन्होंने अपनी बेटियों से उनका आईपैड छीन लिया था। वेनेसा ब्राउन ने बेटियों से उन्हें पढ़ाई पर ध्यान देने का कहकर उनका आईपैड अपने पास रख लिया था। इसके बाद क्या पुलिस ने उन्हें मामले में चोर करार देकर सात घंटे तक सलाखों के पीछे रखा। उनकी 80 साल की मां के साथ अपराधी जैसा बर्ताव किया गया। वेनेसा ने पूरे घटना को नर्क जैसा अनुभव बताया। इसके बाद में उन्हें जमानत की शर्तों के साथ रिहा किया गया। शर्तों में मामला खत्म होने तक उन पर जांच से जुड़े किसी भी व्यक्ति से बात करने पर रोक लगाई गई। पुलिस ने कहा कि इन डिवाइसों की खोज तब शुरू हुई जब 40 वर्ष के एक व्यक्ति ने दो आईपैड चोरी होने की सूचना दी। 26 मार्च को वेनेसा ने अपनी बेटियों के आईपैड इसलिए छीन लिए, ताकि वे पढ़ाई पर ध्यान दें। ये आईपैड उन्होंने अपनी मां के घर में रख दिए। ब्राउन ने बताया, मैं अब भी इस बारे में सोचकर सिहर जाती हूं। पुलिस को एक पल के लिए भी नहीं लगा कि ये मामला इतना बड़ा नहीं। मैंने बस अपने बच्चों के आईपैड रखे थे और मम्मी के घर कॉफी पीने गई थी। लेकिन पुलिस ने मामले में चोरी का केस बना दिया। उन्हें पुलिस स्टेशन ले जाकर तलाशी ली गई, फिंगरप्रिंट लिए गए, और जेल में डाल दिया गया। सात घंटे तक वह जेल में रहीं। इस दौरान मैं सदमें में थी, जैसे मेरी जिंदगी ही छिन गई हो। हद तब हो गई, जब वेनेसा को जेल में डालकर भी पुलिस नहीं रुकी। उन्होंने वेनेसा की एक बेटी को स्कूल जाकर उसकी क्लास से बाहर निकाल लिया, ताकि मामले की जांच हो सके। वेनेसा ने कहा, 'मेरे इलाके में चोरी, हमले और हिंसा के अपराध की शिकायतों पर हफ्तों तक कोई कार्रवाई नहीं होती। लेकिन मेरे खिलाफ झूठी चोरी की शिकायत पर पुलिस ने एक घंटे से भी कम में काम शुरू कर दिया। आखिर इतनी जल्दबाजी किस की चीज की थी' वेनेसा ने कहा, 'पुलिस का रवैया बेहद गैर-पेशेवर था। मेरी मां से इसतरह बात की, जैसे वे कोई खतरनाक अपराधी हों।

साल 2024 में 76 हजार से ज्यादा अकेले लोगों की हुई मौत

टोक्यो

जापान में अकेली मौतों का संकट गहराता जा रहा है। इस देश में सामाजिक अलगाव और अकेलेपन की समस्या अब एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। साल 2024 में देशभर में 76,020 लोगों की मौत उनके घर में अकेले हुई, जिनमें से 76.4 प्रतिशत यानी तीन चौथाई से अधिक की उम्र 65 वर्ष या उससे अधिक थी। यह आंकड़े जापान की राष्ट्रीय पुलिस एजेंसी द्वारा जारी किए गए। आंकड़ों के अनुसार, अकेली मौतों के सबसे अधिक मामले 85 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों में सामने आए, जिनकी संख्या 14,658 रही। इसके बाद 75-79 वर्ष के आयु वर्ग में 12,567 और 70-74 वर्ष के लोगों में 11,600 मौतें दर्ज की गईं। हैरान करने वाली बात यह रही कि इनमें से लगभग 39.2 प्रतिशत शव 24 घंटे के भीतर मिल गए, लेकिन 7.8 प्रतिशत मामलों यानी 4,538 लोगों के शव एक महीने से भी अधिक समय तक उनके घरों में पड़े रहे, जिनका किसी को पता नहीं चला। पुलिस के मुताबिक, इन मौतों का पता अधिकतर तब चला जब लंबे समय तक डाक इकट्ठा होती रही या पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने व्यक्ति से संपर्क न हो पाने पर चिंता जताई। क्षेत्रवार आंकड़ों में सबसे ज्यादा अकेली मौतों के मामले टोक्यो (7,699) में दर्ज किए गए। इसके बाद ओसाका (5,329), कानागावा (3,659) और आइची (3,411) रहे। यह पहली बार है जब जापान में अकेली मौतों को लेकर इस तरह के आंकड़े आधिकारिक रूप से संकलित किए गए हैं। सरकार अब इन आंकड़ों के आधार पर अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की बढ़ती समस्या से निपटने के लिए नई नीतियां तैयार करने की योजना बना रही है। गौरतलब है कि जापान लंबे समय से कोडोकुशी यानी अकेली मौत की समस्या से जूझ रहा है। यह शब्द उन लोगों के लिए इस्तेमाल होता है जो अकेले जीवन बिताते हुए इस दुनिया से चले जाते हैं और जिनकी मौत का पता काफी समय तक किसी को नहीं चलता। यह मुद्दा पहली बार 1980 के दशक में व्यापक रूप से सामने आया था ।

काठमांडू में दो करोड़ के अवैध सोने- चांदी के गहने सहित नौ भारतीय गिरफ्तार

नेपाल के काठमांडू से दो करोड़ रुपये से अधिक के सोने और चांदी के गहने सहित नौ भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि वह राजधानी के विभिन्न स्थानों सोना और चांदी की अवैध बिक्री कर रहे थे। काठमांडू पुलिस के प्रवक्ता अपील बोहरा कहा कि पुलिस कार्रवाई के दौरान छापा मार कर एक किलो 76.518 ग्राम सोना तथा एक किलो 845.429 ग्राम चांदी जब्त की गई है। जब्त किए गए सोने की कीमत एक करोड़ 70 लाख रुपए, जबकि चांदी की कीमत 30 लाख रुपये है। इसके अलावा उनके कब्जे से 8 लाख 27 हजार रुपये नेपाली करेंसी और 91 हजार 700 रुपये भारतीय करेंसी बरामद की गई है। गिरफ्तार किए गए लोगों में 30 वर्षीय नव नाथ बाकू कासिद, संदीप पोपट हजारे 20 वर्ष, अंसार दिलावर सिकलगर 22 वर्ष, सुरेश राजेश मदने 18 वर्ष, अरमान हनीफ इमांडया 21 वर्ष, मनोज सुभाष सकत 22 वर्ष, अमोल कुमार गोस्ले 38 वर्ष, सुनील मितकारी 20 वर्ष और सूरज नंदीवाली 20 वर्ष शामिल हैं।पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार किए गए सभी भारतीय नागरिक महाराष्ट्र से हैं और वर्तमान में काठमांडू में विभिन्न स्थानों पर रह रहे थे।

पाक चीफ ने उगला जहर, कहा-हम हिन्दुओं से हर क्षेत्र में अलग

इस्लामाबाद

पाकिस्तान के आर्मी चीफ जनरल असीम मुनीर ने एक बार फिर भारत और हिन्दुओं के खिलाफ जहर उगला। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने सोचा कि हम जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दुओं से अलग हैं। हमारा धर्म अलग है। हमारे रीति रिवाज अलग हैं और हमारी संस्कृति व सोच भी अलग है। यह द्वि-राष्ट्र की आधार शिला है, जिसे डाला गया था। हम दो देश हैं, एक देश नहीं हैं। पाकिस्तान के बनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने बलिदान दिया। पाक सेना प्रमुख ने बीते दिन इस्लामाबाद में प्रवासी पाकिस्तानियों के सम्मेलन में किसी मौलाना की तरह कहा कि पाकिस्तान की नींव कलमे के आधार पर रखी गई थी।

किसी को भी पाकिस्तान की इस कहानी को कभी नहीं भूलना है। इस बात को अपनी अगली पीढ़ी को बताएं, जिससे वह पाकिस्तान के साथ अपने जुड़ाव को महसूस कर सकें।

इसी तरह हमारी तीसरी, चौथी या फिर पांचवी पीढ़ी हो, सभी को पता होना चाहिए कि पाकिस्तान उनके लिए क्या है। उन्होंने कहा कि आज तक इंसानियत की तारीख में सिर्फ दो रियासतें हैं, जो कि कलमें की बुनियाद पर बनी हैं। पहले जो भी है वह रियासत है तैयबा। क्योंकि तैयबा को हमारे नबी ने नाम दिया था। कुरान में उसका नाम हैं यस रब, जिसे आज मदीना कहते हैं। दूसरी रियासत पाकिस्तान है। 1300 साल बाद अल्लाह ने इसकी बुनियाद कलमे पर रखी है। हैरत की बात तो यह रही कि जब आर्मी चीफ यह तकरीर कर रहे थे, उस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री समेत सभी बड़े नेता मौजूद थे। लेकिन किसी ने भी इस बात पर आर्मी चीफ को नहीं टोका।

कृत्रिम रंग गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं बच्चों के स्वास्थ्य पर

लंदन

बच्चों को रंग-बिरंगे उत्पाद जितने सुंदर और स्वादिष्ट दिखते हैं, ये उनके लिए उतने ही खतरनाक भी हो सकते हैं। इन प्रोडक्ट्स में इस्तेमाल किए जाने वाले आर्टिफिशियल फूड कलर यानी कृत्रिम रंग बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं। विशेषज्ञों की मानें तो इन उत्पादों में रेड 40, येलो 5,येलो6 और ब्ल्यू 1 जैसे सिंथेटिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हैं। ये रंग बच्चों में एलर्जी, त्वचा रोग, अस्थमा, पेट दर्द, नींद की कमी, डायरिया जैसी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इतना ही नहीं, कुछ मामलों में ये रंग बच्चों के ब्रेन फंक्शन और व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। बच्चों में अचानक चिड़चिड़ापन, ध्यान की कमी या गुस्से में बदलाव जैसे लक्षण देखे जा सकते हैं, जिसे कई बार माता-पिता सामान्य व्यवहार मानकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इन खाद्य पदार्थों में मौजूद रंग लंबे समय तक शरीर में रहकर धीरे-धीरे असर करते हैं। ऐसे में इनसे जुड़ी समस्याएं धीरे-धीरे उभरती हैं और माता-पिता को इसका पता तब चलता है जब स्थिति गंभीर हो जाती है। इसलिए सबसे पहले जरूरी है कि बाजार से किसी भी पैक्ड फूड को खरीदते समय उसका लेबल जरूर पढ़ें। अगर उसमें ई102, ई110, ई129 जैसे कोड या आर्टिफिशियल कलर का जिक्र हो, तो उसे बच्चों को देने से बचें। बच्चों को ताजा, घर का बना खाना दें जिसमें प्राकृतिक रंग और पोषण दोनों मौजूद हों। घर में भी आकर्षक रंगों वाला खाना चुकंदर, अनार, पालक, हल्दी, केसर, जामुन और ब्लूबेरी जैसी चीजों से तैयार किया जा सकता है।

अमेरिकी नीतियों से खफा ईरान चाहता है भारत से पक्की दोस्ती, पाक नहीं देता भाव

तेहरान। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों से पूरी दुनिया परेशान हो रही है। ईरान भी इसको लेकर काफी दिक्कतों को महसूस कर रहा है। ऐसे में ईरान भारत से नजदीकी रिश्ते और पाकिस्तान को अलग थलग रखने की कोशिश कर रहा है। ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के संदेश से साफ पता चलता है कि ईरान ब्रिक्स देशों के संगठन में शामिल होना चाहता है जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं। पाकिस्तान पिछले कई वर्षों से ब्रिक्स में शामिल होने की कोशिश कर रहा है। चीन उसकी मदद करना चाहता है लेकिन भारत इसके पक्ष में नहीं है। अगर ईरान को इस ग्रुप में एंट्री मिलती है तो ब्रिक्स एक फौलादी इकॉनामिक ताकत बन कर उभर सकता है। ब्रिक्स में शामिल देशों का दुनिया के कुल व्यापार में लगभग 18 प्रतिशत और कुल जीडीपी में 32 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा है। इसमें चीन सबसे आगे है। चीन का निर्यात 2023 में 13प्रतिशत बढ़ा और उसका बड़ा हिस्सा उसकी अर्थव्यवस्था में योगदान देता है। चीन अब तक सस्ते में अपना सामान अमेरिका में ठेल रहा था लेकिन ट्रंप टैरिफ के बाद ऐसा मुश्किल लग रहा है इसलिए उसकी कोशिश भारत और रूस के साथ रिश्ते बढ़ाने की है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग कई बार हाथी और ड्रैगन के बीच डांस की बात कर चुके हैं। उन्हें पता है कि बदले माहौल में भारत का बड़ा मार्केट उनके लिए संजीवनी है। चीन और रूस के बीच व्यापार 2023 में रिकॉर्ड 240 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। चीन रूस से सस्ता तेल खरीद रहा है और रूस इलेक्ट्रॉनिक्स खरीद रहा है। भारत और रूस का व्यापार भी बढ़कर 45 बिलियन डॉलर हो गया है, जिसमें तेल और उर्वरक जैसे खनिज उत्पादों की अहम भूमिका है। ब्रिक्स देशों के आपस में भी व्यापार बढ़ा है।